147

गीत
सीखड़ली

कानदान 'कल्पित'

गीतकार परिचै

गीतकार अर कवि कानदान 'कल्पित' रौ जनम नागौर जिलै रै झोरड़ा गांव मांय चारण जात री बीठू साखा में वि. सं. 1994 में होयौ। वांरै पिता रौ नांव हरिदानजी बीठू हौ। झोरड़ा गांव री आपरी मोटी विसेसता है कै उठै हरिराम बाबा रौ लोकचावौ मिंदर है। सांप–सपळोटियां सूं जीव मात्र री रिछ्या करण रै रूप में आपरा परचा चावा है। औ गांव हरिराम बाबा रौ झोरड़ौ गांव रै नांव सूं ई जाणीजै। कानदान 'कल्पित' दसवीं तांई पढाई करी, पण मां सुरसत रा सपूत में कविता री निकेवळी इधकाई ही। इण हथोटी रै पांण आपरा अलेखूं गीत अर कवितावां आखै भारत में ठौड़–ठौड़ राखीज्या कवि–सम्मेलनां रै मंचां सूं गूंजी। राजस्थानी समाज में आपरै गीतां नै घणा दाय करीजै। आपरै गीतां नै सुणतां सुणणिया धापै कोनी। गीतां री गोख सूं च्यारूं कांनी रौ वातावरण सरस पण लखावतौ। प्रक्रति में कदैई लड़ालूंब बिरखा रौ वरणाव तौ कठैई फागण री रंगत होवै। थोथी राजनीति सूं मानखै नै हंसावै तौ देसप्रेम रै भावां सूं हिरदौ सींचै। भांत–भांत सूं मानखै नै जगावै तौ कणैई सिणगार रा साज सजावै पण 'सीखड़ली' गीत उगेरै तौ बाईसा रा नैण ई नीं सुणण वाळां रा नैण ई डब–डब भरीज जावै। आपरी रचनावां रौ असर पाठकां रै हियै में अखी रैवण वाळौ है। गीतां रा पारखी इण कवि री छप्योड़ी पोथ्यां में हरिलीला अमृत (खंडकाव्य) में हरिराम बाबै रै जीवण–चरित्र रौ वरणन है। दूजी पोथी 'मरुधर म्हारो देस' में माटी रौ हेत हियै रमग्यौ। केई विसयां में कवि देसप्रेम, भाईपौ, संस्क्रति, परम्परावां रै ओळावै आपरा भाव प्रगट करै तौ प्रक्रति प्रेम री नूंवी अर सिणगारू रचनावां में संवेदना परगटी है। परंपराऊ कविता री ओळ में आप केई लोकगीतां रै ढाळै रा गीत लिख्या। वै लोकगीतां री परम्परा नै जींवती राखण वाळा सिरजणहार हा।

पाठ–परिचै

आपरा चावा गीतां में अेक गीत 'सीखड़ली' है। सीख रौ अरथ 'विदाई' होवै। सीख देवण रौ अरथ सासरै जावती बाई नै मां काळजा सूं लगाय अबोली ई सैंग सिखाय देवै कै अबै वौ ईज थारौ साचौ घर है। लोकलाज, मान–सम्मान, अपणायत री सीख भी देवै। लोक–वैवार में ई कैयीजै है– 'बेटी देखै बाप रै, करै आपरै'। पिता रै घरै मिल्योड़ै संस्कारां नै ठेठ तांई आपरा जीवण में निभावै, आ ईज सीख है। बेटी नै परणाय जद सासरै सीख दिरीजै तद बेटी रै मन में माईतां सूं बिछड़ण री जिकी पीड़ होवै, आपरी साईनी साथणियां सूं न्यारी होवती वा कित्ती कुरळावै, इणरौ मरमपरसी वरणन कवि इण गीत में कर्‌यौ है। कवि बेटी नै चिड़कली, लाडलड़ी, तीतरपंखी, सूवटड़ी जैड़ी ओपमावां दी है। अै बेटी रा विसेसण है। मायड़ रै काळजै री कोर, जिणनै लाडां–कोडा पाळी, मोटी करी, नैणां री पुतळी अर मोतयां सूं मूंघी कर राखी उणनै आज परायै घर सीख देवणी मां नै खारी लागै तौ धीव रै हियै जूनी यादां रौ मीठौ जैर

घुळै। मां जाणै मोत्यां बीचाळै री लाल पल्लै बंध्योड़ी आज खुल'र हेठी पड़गी, गमगी। ममता रौ अथाग समंदर हिलोळा चढगौ। आपरी लाडली नै काठी बाथां में भरली पण सीख देवणी सो देवणी, क्यूंकै बेटी परायौ धन मानीजै। परायै घर री बस्ती कहीजै। काळजा माथै भाटौ मेल'र माईत उणनै आंगणै री सीख देवै, आ इज रीत है। सीख री बगत भाई–भोजाई अर काकोसा–बाबोसा, सगळा आप–आपरा नेगचार करचा। साथणियां रौ झूलरौ तौ बाईसा रै साथै–साथै चालै, आंसूवां रा रेला सूं वांरौ डील भीजग्यौ जाणै मेह री झड़ी लागी होवै। हियौ टूक–टूक होयग्यौ अर आखिर बाई नै होळै–होळै बहीर होवणौ ई पड़ियौ। परबस हास्योड़ी 'कायर हिरणी' ज्यूं पाछी मुड़–मुड़ देखै फेर आंख्यां माथै हाथ मेल दिया। औ बिछड़णौ उणनै घणौ दो'रौ लागौ। रोवतां–रोवतां सिणगार रौ काजळ गळग्यौ। 'सीख' अेक गीत है। उण गीत में गीत उगेरीज्यौ– 'मोरियो अे माय, म्हारी कोयल बाई सिध चाली'। बेटी रौ सासरै वास्तै विदा होवणौ माईतां रै मन में जित्तौ सुख जगावै उतरौ ई दुख उपजावै। अेकै कांनी वै कन्यादान कर रिणमुगत होवै, जिम्मेदारी निभावै, परम्परा नै पोखै तौ बेटी री विदाई सूं घर–आंगणौ अर मां रौ काळजौ सूनौ होय जावै। आपरै टाबरपणै रौ लाड, रूठणौ, मनावणौ, ढूल्यां रौ रमणौ, सगळौ लारै छोड सासरै में नूंवा परिवेस में जाय बसणौ। बेटी रै वास्तै उणरौ जीवण अेक चुनौती सूं कम कोनी। सासरियौ घणौ दो'रौ लागै पण उठै ई उणरी मरजाद है। नैणां में बाळपणै रा सुपनां लियां बेटी आंसूड़ा ढळकाती सासरै जावै। पण पीहरियै री यादां उणरै हिवड़ै रै अेक खूणै में सदैव जीवती रैवै। 'सीखड़ली' मानवी मन में संवेदना जगावण वाळौ गीत है–

सीखड़ली

डब डब भरिया, बाईसा रा नैण
चिड़कली रा नैण, लाडलड़ी रा नैण
तीतरपंखी रा नैण, सूवटड़ी रा नैण
दो'रौ घणौ सासरियौ।

मावड़ जाण कळेजै री कोर, फूल माथै पांख्यां धरी
माथै कर–कर पलकां री छांय, पाळ–पोस मोटी करी
राखी नैणां री पुतळी जाण, मोतीड़ां सूं महंगी करी
कर–कर आघ, लडाई घण लाड,
भरीजी मन गाढ,
जीवण मीठौ जहर पियौ
दो'रौ घणौ सासरियौ।

डूबी सोच समंदड़ै रै बीच, तरंगां में उळझ परी
जाणै मोत्यां बिचली लाल, पल्लै बंधी खुल परी
भरियौ नैणां ममता–नीर, लाडलड़ी नै गोद भरी

जागी–जागी काळजै री पीड़,
हियै सूं लीवी भीड़,
गरळ–गळ हिवड़ौ भर्‌यौ
दो'रौ घणौ सासरियौ।
भाभीसा काढ काजळियै री रेख, संवारी हिंगळू मांगड़ली
बीरोसा लाया सदा सुरंगौ बेस, ओढाई बोरंग चूंदड़ली
बाबोसा फेर्‌यौ माथै पर हाथ दिराई बाई नै सीखड़ली
ऊभौ–ऊभौ साथणियां रौ साथ,
आंसूड़ां भीज्यौ है गात,
नैणां झड़ ओसरियौ,
दो'रौ घणौ सासरियौ।

करती कळझळ हिवड़ै रा टूक, कूंकूं पगल्या आगै धर्‌या
कायर हिरणी–सी मुड़–मुड़ देख, आंख्यां माथै हाथ धर्‌या
मुखड़ौ मुरझ्यौ बिछड़ंतां आज, रो–रो नैण राता कर्‌या
चांद–मुखड़ै उदासी री रेख,
डुसक्यां भरती देख,
सहेल्यां गायौ मोरियौ,
दो'रौ घणौ सासरियौ।

रथड़ै चढतोड़ी पाछल फोर, सहेल्यां नै झालौ दियौ
कूंकूं–छाई बाजर हरियै खेत, जाणै जियां झोलौ बियौ
छळक्या नैण घूंघटियै री ओट, काळजौ काढ लियौ
काळी–काळी काजळियै री रेख,
मगसी पडग़ी देख,
नैणां सूं ढळक्यौ काजळियौ,
दो'रौ घणौ सासरियौ।

मनण–रूठण रा आणंद उछाव, हियै रै परदै मंडता गिया
सारा बाळपणै रा चितराम, नैणां आगै ढळता गिया
बिलखी मावड़ नै मुड़ती देख, विकळ नैण झरता गिया
करती निस–दिन हंस–किलोळ,
बाबोसा–घर री पोळ,
ढूल्यां रौ रमणौ छूट गियौ,
दो'रौ घणौ सासरियौ।

लागी बाळपणै री प्रीत, जातोड़ी जिवड़ौ दो'रौ कियौ
रेसम रासां नै दी फणकार, सागड़ी नै रथड़ौ खड़्यौ
धरती–अंबर रेखा रै बीच, सोवन सूरज डूब गियौ
दीख्या–दीख्या सासरियै रा रूंख,
रेतड़ली रा टूंक,
सौ कोसां रहग्यौ पीवरियौ,
दो'रौ घणौ सासरियौ।

डब डब भरिया, बाईसा रा नैण
चिड़कली रा नैण, लाडलड़ी रा नैण
तीतरपंखी रा नैण, सूवटड़ी रा नैण
दो'रौ घणौ सासरियौ।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

नैण=आंख्यां। मावड़=मां। आघ=पहल, अगवाणी। हियौ=हिरदौ, काळजौ। बोरंग=रंग–बिरंगी। गात=सरीर। कायर=डरपोक। राता=लाल। मगसी=फीकी। पोळ–मोटौ दरवाजौ, मुख्य द्वार, मौड़ौ। ढुल्यां=गुडिया, कपड़ै री गुड्डी। सागड़ी=सारथी।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. हरिराम बाबै रौ लोकचावौ मिंदर है–
   (अ) बिरकाळी (ब) झोरड़ा
   (स) जोधपुर (द) समदड़ी
   ( )

2. 'हरिलीला अमृत' काव्य रौ कुणसौ रूप है?
   (अ) महाकाव्य (ब) खंडकाव्य
   (स) चम्पूकाव्य (द) गद्यकाव्य
   ( )

3. कानदान कल्पित री चावी पोथी है–
   (अ) मरुधर म्हारौ देस (ब) बादळी
   (स) लीलटांस (द) राधा
   ( )

4. कानदान 'कल्पित' ओळखीजै–

(अ) गीतां सूं (ब) कहाण्यां सूं
(स) निबन्धां सूं (द) नाटकां सूं

( )

साव छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. कानदान 'कल्पित' रौ जलम कठै होयौ?
2. कवि कानदान रै पिता रौ नांव कांई हौ?
3. कवि कानदान री दो पोथ्यां रौ नांव लिखौ।
4. हरिराम बाबा किणसूं जीवां री रिछ्या करै।
5. कवि रौ गांव किण कारण सूं चावौ है?

छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. 'सीखड़ली' गीत में बेटी वास्तै कांई–कांई सबद काम में लिरीज्या है।
2. 'सीखड़ली' गीत में भाई–भावज कांई कर सीख देवै।
3. मावड़ रै वास्तै बेटी कांई है? गीत सूं टाळवीं ओपमावां लिखौ।
4. सीख री टैम साथणियां री कांई दसा व्है?

लेखरूप पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. 'सीखड़ली' में विदा होवती बेटी रै मन री पीड़ रौ भाव आपरै सबदां में लिखौ।
2. 'सीखड़ली' गीत रौ सार आपरै सबदां में लिखौ।
3. ''सीखड़ली में विजोग री पीड़ सूं पाठकां अर स्रोतावां रै नैणां नीर आयां बिना नीं रैवै।'' इण कथन रौ खुलासौ करौ।
4. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) डूबी सोच समंदड़ै रै बीच, तरंगां में उळझ परी
जाणै मोत्यां बिचली लाल, पल्लै बंधी खुल परी
भरियौ नैणां ममता–नीर, लाडलड़ी नै गोद भरी

(ब) करती कळझळ हिवड़ै रा टूक, कूंकूं पगल्या आगै धरत्या
कायर हिरणी–सी मुड़–मुड़ देख, आंख्यां माथै हाथ धरत्या
मुखड़ौ मुरझ्यौ बिछड़ंतां आज, रो–रो नैण राता करत्या